रामचंद्र शुक्ल

जन्म	:	1884 (आश्विन पूर्णिमा, सं० 1941) ।
निधन	:	2 फरवरी 1941, काशी ।
जन्म-स्थान	:	अगोना, जिला - बस्ती, उत्तर प्रदेश ।
पिता	:	पं० चंद्रबली शुक्ल ।
शिक्षा	:	ऐंग्लो संस्कृत जुबली स्कूल, मिर्जापुर से 1898 में उर्दू और अंग्रेजी के साथ मिडिल । लंदन मिशन स्कूल मिर्जापुर से 1901 में स्कूल की परीक्षा । कायस्थ पाठशाला, प्रयाग में इंटर में नामांकन, किंतु पढ़ाई अधूरी रही । स्वाध्याय द्वारा प्रभूत विद्यार्जन ।
वृत्ति	:	1904 में लंदन मिशन स्कूल में ड्राइंग टीचर । 1908 में 'काशी नागरी प्रचारिणी सभा' की परियोजना–'हिंदी शब्द सागर' में सहायक संपादक । धनार्जन के लिए अनुवाद आदि । 'नागरी प्रचारिणी सभा' पत्रिका का संपादन । 1921 से काशी हिंदू विश्वविद्यालय में अध्यापन, 1937 में हिंदी विभागाध्यक्ष, काशी हिंदू विश्वविद्यालय ।
प्रमुख कृतियाँ	:	मधुस्रोत (कविता संग्रह), गोस्वामी तुलसीदास, जायसी ग्रंथावली की भूमिका, भ्रमरगीत सार, रस मीमांसा (सं० विश्वनाथ प्रसाद मिश्र), त्रिवेणी (सं० कृष्णानंद) – (पाठालोचन और आलोचना) । हिंदी साहित्य का इतिहास (साहित्य का इतिहास), श्री राधाकृष्णदास की जीवनी (जीवनी), चिंतामणि, भाग-1, चिंतामणि, भाग-2 (सं० विश्वनाथ प्रसाद मिश्र), चिंतामणि, भाग - 3 (डॉ० नामवर सिंह) - (सभी निबंध) । विश्वप्रपंच (लंबी भूमिका के साथ अनुवाद), कल्पना का आनंद, शशांक, बुद्धचरित (सभी अनुवाद) । अन्य कई अनुवाद, लेख, टिप्पणियाँ, विविध विषयक निबंध-प्रबंध पत्र-पत्रिकाओं में बिखरे ।

आचार्य रामचंद्र शुक्ल हिंदी साहित्य के महान आलोचक, इतिहासकार, निबंधकार और लेखक थे । इतिहास, आलोचना और निबंध के क्षेत्र में उनका अवदान युग प्रवर्तक और अप्रतिम है । हिंदी भाषा और साहित्य की, विशेष रूप से हिंदी आलोचना और चिंतन की, आधुनिक छवि और पहचान, मूलत: उनके द्वारा ही प्राप्त है । स्वभावत: समय के साथ-साथ उनका महत्त्व और अधिक बढ़ता तथा निखरता जा रहा है ।

आचार्य शुक्ल ने ही हिंदी के सैद्धांतिक और व्यावहारिक साहित्य चिंतन को वैश्विक ऊँचाई, गहराई, व्यापकता और गंभीरता दी । उन्होंने साहित्य को जीवन-जगत की वास्तविकता और गतिशील यथार्थ के सान्निध्य तथा विकासधर्मी ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में रखते हुए विश्लेषित और परिभाषित किया । दर्शन, मनोविज्ञान, इतिहास और समाजशास्त्र का अपनी कल्पनाशील अंतर्दृष्टि में समाहार और विनियोग करते हुए उन्होंने भाषा-साहित्य की संपूर्ण परंपरा को युगानुरूप नई अर्थवत्ता से उद्‌भासित कर दिया । आचार्य शुक्ल

का साहित्य चिंतन पुस्तकों में शुरू होकर उन्हीं में समाप्त नहीं हो जाता । उनकी आलोचना किताबों से उठकर हमारे जीवन में आश्रय और सहभागिता चाहती है । आचार्य शुक्ल के साहित्य चिंतन और आलोचना का राष्ट्रीय स्वाधीनता आंदोलन, देश और समाज की अवस्थिति तथा दुनिया के पटल पर ज्ञान-विज्ञान के विकास से गहरा संबंध था । वे साहित्य को समय, समाज और परिवेश से प्रभावित मानते थे किंतु यह भी मानते थे कि साहित्य इन सबको उतना ही प्रभावित भी करता है ।

आचार्य शुक्ल की भाषा और विवेचन शैली गंभीर और प्रौढ़ है, किंतु उतनी ही ठेठ, सरल और बोधगम्य भी । लेखक और आलोचक होने के साथ-साथ वे हिंदी भाषा साहित्य के महान अध्यापक भी थे । यहाँ प्रस्तुत पाठ 'कविता की परख' 'चिंतामणि' भाग-3 से लिया गया है जिसे प्रख्यात आलोचक डॉ० नामवर सिंह ने 1983 में संपादित किया । 'कविता की परख' मूलतः हाई स्कूल के छात्रों के लिए लिखा गया निबंध है जो पहली बार आचार्य शुक्ल द्वारा स्कूल के छात्रों के लिए संपादित पुस्तक 'हिंदी गद्य चंद्रिका' में 1938 में प्रकाशित हुआ था । विशेष रूप से स्कूली छात्रों के लिए लिखे गए इस निबंध की आज भी उतनी ही सार्थकता और प्रासंगिकता है । कविता को परखने के बुनियादी साधन आज भी वे ही हैं जिनकी सीख आचार्य ने दी है । इन साधनों की आधारभूत सीख आज कहीं अधिक प्रासंगिक है ।

◆ ◆ ◆

"कविता वह साधना है जिसके द्वारा शेष सृष्टि के साथ मनुष्य के रागात्मक संबंध की रक्षा और निर्वाह होता है ।

कविता के द्वारा हम संसार के सुख-दुःख, आनंद और क्लेश आदि यथार्थ रूप से अनुभव करने में अभ्यस्त होते हैं जिससे हृदय की स्तब्धता हटती है और मनुष्यता आती है ।

कविता सृष्टि-सौंदर्य का अनुभव कराती है और मनुष्य को सुंदर वस्तुओं में अनुरक्त और कुत्सित वस्तुओं से विरक्त करती है ।"

(कविता क्या है)

–आचार्य रामचंद्र शुक्ल

कविता की परख

कविता का उद्देश्य हमारे हृदय पर प्रभाव डालना होता है, जिससें उसके भीतर प्रेम, आनंद, हास्य, करुणा, आश्चर्य इत्यादि अनेक भावों में से किसी का संचार हो । जिस पद्य में इस प्रकार प्रभाव डालने की शक्ति न हो, उसे कविता नहीं कह सकते । ऐसा प्रभाव उत्पन्न करने के लिए कविता पहले कुछ रूप और व्यापार हमारे मन में इस ढंग से खड़ा करती है कि हमें यह प्रतीत होने लगता है कि वे हमारे सामने उपस्थित हैं । जिस मानसिक शक्ति से कवि ऐसी वस्तुओं और व्यापारों की योजना करता है और हम अपने मन में उन्हें धारण करते हैं, वह कल्पना कहलाती है । इस शक्ति के बिना न तो अच्छी कविता ही हो सकती है, न उसका पूरा आनंद ही लिया जा सकता है । सृष्टि में हम देखते हैं कि भिन्न-भिन्न प्रकार की वस्तुओं को देखकर हमारे मन पर भिन्न-भिन्न प्रकार का प्रभाव पड़ता है । किसी सुंदर वस्तु को देखकर हम प्रफुल्ल हो जाते हैं, किसी अद्‌भुत वस्तु या व्यापार को देखकर आश्चर्यमग्न हो जाते हैं, किसी दुख के दारुण दृश्य को देखकर करुणा से आर्द्र हो जाते हैं । यही बात कविता में भी होती है ।

जिस भाव का उदय कवि को पाठक के मन में कराना होता है, उसी भाव को जगानेवाले रूप और व्यापार वह अपने वर्णन द्वारा पाठक के मन में लाता है । यदि सौंदर्य की भावना उत्पन्न करके मन को प्रफुल्ल और आह्लादित करना होता है तो कवि किसी सुंदर व्यक्ति अथवा किसी सुंदर और रमणीय स्थल का शब्दों द्वारा चित्रण करता है । सूरदासजी ने श्रीकृष्ण के अंग-प्रत्यंग का जो वर्णन किया है उसे पढ़कर या सुनकर मन सौंदर्य की भावना में लीन हो जाता है । गोस्वामी तुलसीदासजी की गीतावली में चित्रकूट का यह वर्णन कितनी सुंदरता हमारे समक्ष लाता है –

"सोहत स्याम जलद मृदु धोरत धातु-रंगमगे शृंगनि ।"

इसी प्रकार भय का भाव उत्पन्न करने के लिए कवि जो रूप सामने रखेगा वह बहुत ही विकराल होगा । जैसा कुंभकरण का रूप रामचरितमानस में है । राम के वन-गमन पर अयोध्या की दशा का जो वर्णन रामायण में है, उससे किसका हृदय दुख और करुणा का अनुभव न करेगा ?

अपने वर्णनों में कवि लोग उपमा आदि का भी सहारा लिया करते हैं । वे, जिस वस्तु के वर्णन का प्रसंग होता है, उस वस्तु के समान कुछ और वस्तुओं का उल्लेख भी किया करते हैं; जैसे – मुख को चंद्र या कमल के समान, नेत्रों को मीन, खंजन, कमल आदि के समान, प्रतापी या तेजस्वी को सूर्य के समान; कायर को शृगाल के समान, वीर और पराक्रमी को सिंह के समान

5. आलोचना के अतिरिक्त शुक्ल जी ने और क्या-क्या लिखा है ?
6. 'उनकी आलोचना किताबों से उठकर हमारे जीवन में आश्रय और सहभागिता चाहती है' लेखक परिचय के इस वाक्य की पुष्टि पाठ से करें ।

भाषा की बात

1. निम्नलिखित विशेष्यों के लिए उपयुक्त विशेषण दें –
   मुख, चरण, नेत्र, सूर्य, चंद्रमा, हवा, कमल
2. 'ता' प्रत्यय से इस पाठ में कई शब्द हैं, जैसे- निपुणता, गंभीरता आदि । ऐसे शब्दों को चुन कर लिखें ।
3. निम्नलिखित शब्दों से 'इक' प्रत्यय लगाकर शब्द बनाएँ –
   हृदय, करुणा, शब्द, मुख, प्रकृति, सिद्धांत, वास्तव, बुद्धि, मर्म, स्वभाव
4. पाठ से द्वंद्व समास के उदाहरण चुनें ।
5. निम्नलिखित शब्दों से विशेषण बनाएँ –
   माधुर्य, कांति, मुख, उपमा, वास्तव, रंग, रमणीयता, मानव
6. निम्नलिखित शब्दों के विपरीतार्थक शब्द लिखें –
   उपस्थित, उदय, स्थल, कायर, बड़ाई, परिमाण, अधिक, उचित
7. निम्नलिखित शब्दों के संज्ञा रूप लिखें –
   हार्दिक, सुंदर, विकराल, पराक्रमी, वास्तविक, मधुर, उचित

शब्द निधि

उत्साह	:	खुशी, उमंग	आर्द्र	:	भींगा हुआ
करुणा	:	दया, वेदना	रमणीय	:	सुंदर
व्यापार	:	क्रिया, गतिविधि	समक्ष	:	सामने
दारुण	:	असहनीय	विकराल	:	भयानक
आह्लादित	:	प्रसन्न	शृगाल	:	सियार
प्रतापी	:	प्रभावशाली, पराक्रमी	कांति	:	चमक
निपुणता	:	दक्षता	व्यंजना	:	व्यक्त या प्रकट करना
उग्र	:	उत्तेजित	खंजन	:	चंचल आँखों वाला विशिष्ट पक्षी
अधीरता	:	बेचैनी	कुतूहल	:	अचरज, विस्मय
परिज्ञान	:	विशिष्ट ज्ञान	दूषण	:	दोष, कलंक
बोध	:	समझ	परिमाण	:	मात्रा
प्रफुल्ल	:	प्रसन्न			